B.A. HINDI HONOURSE PART – 1

PAPER – 1

गद्य की विभिन्न विधाएँ

"एकांकी"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

एकांकी

एक अंक वाले नाटकों को **एकांकी** कहते हैं। अंग्रेजी के 'वन ऐक्ट प्ले' शब्द के लिए हिंदी में 'एकांकी नाटक' और 'एकांकी' दोनों ही शब्दों का समान रूप से व्यवहार होता है।

हिंदी एकांकी का इतिहास

हिंदी साहित्य के इतिहासकार एकांकी का प्रारंभ भारतेंदुयुग से मानते हैं। प्रसाद के 'एक घूँट' (१९२९ ई.) से दूसरा चरण, भुवनेश्वरप्रसाद के 'कारवाँ' (१९३५ ई.) से तीसरा तथा डॉ॰ रामकुमार वर्मा के 'रेशमी टाई' (१९४१ ई.) संकलन से चौथे चरण की शुरूआत कही गई है।

हिंदी एकांकी का अद्यतन इतिहास संक्षेप में इस प्रकार है :

(१)भारतेन्दु काल में दो प्रकार के एकांकी लिखे गए। प्रथम, अनूदित या छायांकित एकांकी तथा द्वितीय, मौलिक एकांकी। पहली कोटि में भारतेन्दु का बांग्ला के 'भारतमाता' का अनुवाद 'भारत जननी'; राधाचरण गोस्वामी द्वारा बँगला के 'भारतेर यवन' का अनुवाद 'भारतवर्ष में यवन लोग ' आदि हैं।

दूसरी कोटि में भारतेन्दुकृत 'विषस्यविषमौषधम्', 'प्रेमजोगिनी' (अपूर्ण), गीतिरूपक 'नीलदेवी' तथा 'सतीप्रताप' (अपूर्ण); राधाचरण गोस्वामी कृत 'तनमनधन गोसाई के अरपन', लाला श्रीनिवासदास का 'प्रह्लाद चरित'; बदरीनारायण प्रेमघन का 'प्रयाग

रामागमन'; कृष्णशरण सिंह गोपकृत 'माधुरी' आदि एकांकी आते हैं।

ऐतिहासिक आख्यान तथा समाजसुधार के प्रसंग ही उपर्युक्त एकांकियों के विषय हैं। इन्हें आधुनिक एकांकी का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है। कला का विकसित रूप इनमें नहीं मिलता; शैलियाँ परस्पर कुछ भिन्न हैं पर परंपरा एक ही है। उक्त एकांकी अभिनेय की अपेक्षा पाठय अधिक हैं। लेखकों का झुकाव जीवन की स्थूलता का वर्णन करने की ओर है; वृत्तियों की सूक्ष्म विवृत्ति इनमें नहीं मिलती।

(२) एकांकी के दूसरे युग में जयशंकर प्रसाद का 'एक घूँट' लिखा गया जिसपर संस्कृत का भी प्रभाव है और बँगला के माध्यम से आए पाश्चात्य एकांकी शिल्प का भी। प्रसाद जी ने इसी बीच 'कल्याणी परिणय' भी लिखा, पर वह अभी तक अप्रकाशित है। साथ ही, इसे उनके 'चन्द्रगुप्त नाटक का एक भाग भी कहा जा सकता है। 'एक घूँट' में एकांकी के कमोबेश लगभग सभी आधुनिक लक्षण मिल जाते हैं। विवाह समस्या का विवेचन एवं समाधान भावुकतापूर्ण शैली में किया गया है। परन्तु 'एक घूँट' एक ही रह गया; अन्य लेखकों को यह एकांकी लेखन की ओर प्रवृत्त न कर सका।

(३) एकांकी का तीसरा चरण भुवनेश्वर प्रसाद के 'कारवाँ' संग्रह से शुरू होता है जिसमें छह एकांकी हैं। १९३८ ई में 'हंस' का एकांकी अंक प्रकाशित हुआ। इसमें तत्कालीन प्रतिनिधि एकांकी प्रस्तुत किए गए। इसी बीच सत्येन्द्र का 'कुनाल', पृथ्वीनाथ शर्मा का 'दुविधा', रामकुमार वर्मा का 'पृथ्वीराज की आँखें'; सूर्यशरण पारीक का 'बैलावण या

प्रतिज्ञापूर्ति' आदि प्रकाशित हुए। उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास प्रभृति एकांकीकार भी इसी काल में एकांकी लेखन की ओर प्रवृत्त हुए और उनके कई सशक्त एकांकी प्रकाश में आए।

(४) चतुर्थ चरण तक पहुँचते-पहुँचते एकांकी का स्वरूप, शिल्प आदि पूरी तरह स्थिर हो जाते हैं, उनका प्रामाणिक रूप सामने आता है। इससे पहले तो वह अपना सही रूप तलाशने में लगा था। डॉ॰ रामकुमार वर्मा के 'रेशमी टाई' एकांकीसंग्रह से इस युग का सूत्रपात हुआ ।

इस युग के एकांकी स्वतंत्र एवं सचेष्ट भाव से लिखे गए हैं। अत: विषय की अपेक्षा शिल्प उनमें विशेष है। बौद्धिक उत्सुकता, मानसिक विश्लेषण, अंतर्द्वंद्व की अभिव्यक्ति, हास्य तथा चुटीले व्यंग्य, संवादों की कसावट, मार्मिक स्थलों का चयन, यथार्थ प्रस्तुतीकरण के प्रति आग्रह, मनोवैज्ञानिक कार्यव्यवहार, पद्य का लगभग अभाव, सामान्य नायक की स्वीकृति, रंगसंकेत आदि उत्तरोत्तर बढ़ते गए हैं। युग की विभिन्न एवं विविध अभिरुचियों के अनुसार इस समय के एकांकियों के विषय भी अनेक रहे हैं, जिनमें प्रेम, विवाह, घृणा, क्रूरता, हत्या, पौराणिक आख्यान, लोकगाथात्मक एवं लोकविश्रुत वीरों तथा राजाओं के कृत्य, सामाजिक कुरीतियाँ, वर्गसंघर्ष, देशभक्ति, हिंदु-मुसलमान-भ्रातृत्व, सत्याग्रह, यौनाकर्षण आदि प्रमुख हैं।

(५) हिंदी एकांकी पाँचवाँ अथवा अंतिम चरण एकांकी की विविध विधाओं को लेकर प्रारम्भ होता है जिनमें मंच एवं ध्वनि एकांकी के अलावा 'ओपेन एयर एकांकी', 'चित्र एकाकी' (टेलिविजन पर दिखाए जानेवाले) 'गली एकांकी' आदि सम्मिलित किए जा सकते

हैं। डॉ॰ लक्ष्मीनारायण कृत 'बसन्त ऋतु का नाटक', 'मम्मी ठकुराइन', 'राजरानी'; देवराज दिनेश के 'समस्या सुलझ गई', 'तुलसीदास', 'रिश्वत के अनेक ढंग'; जयनाथ नलिन रचित 'भक्तों की दीनता'; सत्येंद्र शरत् कृत 'नवजोती की नई हिरोइन'; विनोद रस्तोगी का 'बहू की विदा'; चिरंजीत के 'चक्रव्यूह' 'ढोल की पोल', (ध्वनि नाटक), पाँच प्रहसन' (संकलन); [[रेवतीशरण शर्मा]]कृत 'तलाक'; विमला लूथरा का 'अपना घर'; ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'रोटीवाली गली'; कृष्णकिशोर श्रीवास्तव के 'सत्यकिरण', 'मछली के आँसू', 'आस्तीन के साँप'; इंदुशेखर का 'महल्ले की आबरू'; स्वामीनाथ कृत 'आई.ए.एस.' ; राजेंद्रकुमार शर्मा के 'पर्दा उठने से पहले', 'रेत की दीवार', 'अटैची केस', अरुण रचित 'रेलगाड़ी के डिब्बे', 'भोर की किरणें'; श्रीकृष्ण कृत 'माँ जी', 'तरकश के तीर'; मुक्ता शुक्ल के 'पर्दे और परछाइयाँ'; 'भीतरी छाया', कुमार राजेंद्र कृत 'आदमखोर' (ओपेन एयर एकांकी); कंचनकुमार लिखित 'सूअर बाड़े का जमादार' (गली एकांकी) आदि इस खेवे की प्रमुख रचनाएँ हैं।

इस काल में कुछ बेमानी (ऐब्सर्ड) एकांकी भी लिखे गए हैं जिनमें सत्यदेव दुबे कृत 'थोड़ी देर पहले और थोड़ी देर बाद'; धर्मचंद्र जैन का 'चेहरों के चेहरे'; मोहन राकेश का बीज नाटक 'शायद' आदि उल्लेख्य हैं। डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, गंगाधर शुक्ल, विनोद रस्तोगी, उपेन्द्रनाथ अश्क, कमलेश्वर तथा मनहर चौहान ने इधर बहुत से चित्रएकांकी भी प्रस्तुत किए हैं।

पाँचवें चरण के एकांकियों में या तो पाश्चात्य रचनाप्रक्रिया को कठोरता के साथ ग्रहण किया गया है अथवा उसमें प्रतिभा और

बुद्धि से नए वस्तुविधान, नई अभिव्यंजना द्वारा मौलिक रूप का निर्माण कर लिया गया है। गीतों का इनमें एकांत अभाव है, प्रकाश का जमकर उपयोग किया गया है, जिसमें पर्दो की जरूरत बहुत कुछ समाप्त हो गई है। संवाद अत्यंत कसे हुए तथा चुटीले हैं। जीवन के नए ढंग, उसकी आशाओं, निराशाओं, छोटी छोटी समस्याओं तथा प्रति दिन की सामान्य घटनाओं को लेकर ये एकांकी रचे गए हैं। चित्र एकांकियों ने 'आउट-डोर-हीनता' को तोड़ा है। इसमें अब पहाड़ी नदी की चंचलता, सड़कों पर भागती कारें, समुद्र में चलते यान, आकाश में शत्रुविमानों से जूझते 'नैट' आदि दिखाए जाते हैं। गली एकांकी ने मंच को तोड़ा है तो बेमानी एकांकियों ने दर्शकों को ही मंचपर लाकर खड़ा कर दिया है।

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni